Subjectivity in History

Paper-1

इतिहास में विषयवस्तु अर्थात व्यक्तिगत विचारों के परिप्रेक्ष्य में ऐतिहासिक घटनाओं की समस्या अपरिहार्य है। इसके अनेक विविध कारण हैं। सर्वप्रथम, इतिहास के विषय-वस्तु का सम्बन्ध अनेक घटनाओं से है जो इतिहासकार के जीवन से कभी-कभी प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है या कभी-कभी उन घटनाओं में एक सक्रियता के रूप में सम्मिलित रहता है। और उसी अतीत के विचारों का प्रभाव उसके सोचने समझने के ढंग पर बना रहता है। अतः इसके लिए इन व्यक्तिगत प्रभावों और पूर्वाग्रहों से पूर्णतः मुक्त होना असंभव नहीं।

दूसरी ओर ऐतिहासिक घटनाओं के अध्ययन व्याख्या और विश्लेषण के क्रम में विभिन्न घटनाओं को एक दूसरे से पृथक करते हुए एकांतिक ढंग से समझा नहीं जा सकता है। ऐसी घटनाओं के बीच तुलना समानता और असमानता का निर्धारण करना वस्तुतः अनिवार्य हो जाता है। ऐसी परिस्थिति में अन्य घटनाओं के प्रति इतिहासकार की समझ अथवा उनके सम्बन्ध में इतिहासकार के विचार निर्णायक महत्व धारण कर लेती है। इतना ही नहीं ऐतिहासिक घटनाओं का विस्तार विश्व-व्यापी होता है और किसी एक देश में घटने वाली घटना के अध्ययन अन्य देशों के इतिहासकार भी करते हैं। ऐसी परिस्थिति में एक देश या दूसरे देश के इतिहासकारों के दृष्टिकोण में

या उनके विचारों में अन्तर का होना स्वाभाविक है और यह अन्तर व्यक्तिगत पूर्वाग्रह वर्ग ही परिणाम होता है।

ऐसे भी उदाहरण है जब कोई एक घटना एक से अधिक देशों को प्रभावित करती है और ऐसे सभी देशों में इतिहासकार इनका अध्ययन करते है। इस प्रकार की परिस्थिति में व्यक्तिगत पूर्वाग्रह की भावना और भी निर्णायक बन जाती है। उदाहरण के लिए प्रथम विश्व युद्ध सम्बन्धी विवादों को लिया जाए तो इंग्लैण्ड और फ्रांस के इतिहासकारों ने इस सम्बन्ध में जो विचार व्यक्त किए हैं उनसे एक भिन्न विचार जर्मन इतिहासकारों में देखे जा सकते है।

कभी-कभी एक ही देश या समाज में बदलती हुई परिस्थितियों के अन्तर्गत इतिहासकारों का रूप बदलता है। द्वितीय विश्व युद्ध के कुछ समय पूर्व या युद्ध की अवधि में नाजी सरकार के अधीन जर्मनी में जिस ढंग का इतिहास लेखन देखा गया वह युद्धोत्तर काल में पुर्णत: बदल गया। पूर्व काल में जर्मनी में नाजीवाद को वरदान के रूप में देखा गया। जिसके अध्ययन से जर्मनी के राष्ट्रीय गौरव आरम्भ अभियान और साम्राज्यवादी शक्ति की प्राप्ती समझी गयी।

युद्धोत्तर काल में इसे जर्मन राष्ट्र का एक अभिशाप माना गया जिसने जर्मनी को अपार क्षति पहुंचाई।
इतिहास में ऐसे विचारों का विश्लेषण परिवर्तन एवं संशोधन निरंतर होते रहते हैं और ऐसा होना अनिवार्य भी है। परंतु इस प्रक्रिया में व्यक्तिगत पूर्वाग्रह का होना भी इतना ही स्वभाविक है और इससे मुक्ति इतिहासकार के लिए संभव नहीं है किंतु भी इस पूर्वाग्रह को नियंत्रित करने की आवश्यकता सदैव बनी रहती है। इसके लिए दो स्तरों पर सतर्कता की आवश्यकता है। प्रथम सचेत स्तर पर यह अनिवार्य है कि इतिहासकार अपनी लेखनी में तथ्यों की प्रधानता बनाए रखें। इसका अभिप्राय यह है कि इतिहासकार किसी भी घटना से सम्बन्धित सभी ऐतिहासिक तथ्यों को जानने की चेष्टा करे। तब ऐसे तथ्यों के बीच तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए अधिक प्रभावशाली और निर्णायक तथ्यों के आधार पर अपना तर्क प्रस्तुत करें। ऐसा नहीं हो कि इतिहासकार पहले से ही कुछ निष्कर्ष अपने सम्मुख बनाए रखे और इसका औचित्य सिद्ध करने के लिए ऐतिहासिक तथ्यों के चयन में तथा प्रस्तुतीकरण में पूर्वाग्रह से काम ले।
अतः यह स्पष्ट है कि तथ्यों और विश्लेषणों में जहाँ तक तथ्यों की प्रधानता बनी रहे सराहनीय है। अन्यथा व्यक्तिगत पूर्वाग्रह का प्रभाव इतना बढ़ जाता है कि ऐतिहासिक तथ्यों के प्रस्तुतीकरण

में विचार आने लगता है। इससे स्तर पर इतिहासकार के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह ऐतिहासिक तथ्यों और विश्लेषण करने के साथ-२ इसके आधार सिद्धांत और कुछ विषय भी प्रस्तुत करे। जिसकी मान्यता काल और देश की सीमाओं से मुक्त रहते हुए एक वृहत् विषय का आधार प्रस्तुत कर सके। इस तरह के आधार के विश्लेषण के प्रस्तुतीकरण में व्यक्तिगत पूर्वाग्रह की संभावना स्वतः कम हो जाती है। क्योंकि ऐसे सिद्धांत किसी एक घटना किसी एक देश या समाज के संदर्भ में प्रस्तुत की जाती है। इस की मान्यता और विश्वसनीयता एक घटना या उसकी विशेषताओं से ही नहीं आनकी उनकी जाती बल्कि इस सिद्धांत पर अनेक घटनाओं को समझने का प्रयास करता है अतः इस का आधार वस्तुनिष्ठ प्रश्न पर टिका रहता है।

इतिहासकार अपने आप में किसी भी घटना को व्याख्या पर अंतिम शब्द कहने में सक्षम नहीं होते है। इसका विचार, उसका विश्लेषण एक संभावना को प्रस्तुत करने में सहायक होता है और इससे सम्बंधित तर्क और वाद-विवाद हमेशा बनी रही है। ऐसी परिस्थिति में उन्ही इतिहासकारों का विश्लेषण प्रमाणिकता सिद्ध कर पाते है या उन्हें वृहत रूप से मान्यता प्राप्त होती है जो अपने तथ्यों में विश्लेषण की मान्यता को ध्यान देने में सक्षम होता है। व्यक्तिगत पूर्वाग्रह इस प्रकार अपरिहार्य भी है और उस पर नियंत्रण करना भी अति आवश्यक है इस लिए इन पूर्वाग्रहों से पूर्णतः मुक्त नहीं हो पाता है। जहां तक इस के प्रभाव से मुक्त रहने में सफल होता है वहां तक उसकी प्रमाणिकता और प्रमाण सामान्य स्वीकृति प्राप्त कर पाती है।